एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कृषक श्री रामनिवास भाकर की सफलता की कहानी (अजौला खेती)

(*आनंद हर्षाना[1] एवं मोनिका जाट[2])
[1]कीट विज्ञान प्रभाग, आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारत-110012
[2] कृषि अधिकारी, उप निदेशक उद्यान, कृषि विभाग, झुंझुनू, राजस्थान-333001
*संवादी लेखक का ईमेल पता: anandharshana@gmail.com

झुन्झुनू जिले की नवलगढ तहसील के कारी गांव के किसान श्री रामनिवास भाकर ने अजौला खेती के नवाचार से लाभ कमाया है। पषुपालन के जरिये वह अब 5000 रूपये प्रतिमाह अतिरिक्त आमदनी कर रहे है। 50 वर्षीय श्री रामनिवास ने 10 वी तक की शिक्षा हासिल करने के बाद पारीवारिक परिस्थितियों के कारण आगे की और पढाई नही कर सकने के कारण खेती व पशुपालन को अपना व्यवसाय बना लिया। इनके पास 1.0 हैक्टयर जमीन है, जिसमें जैविक विधि से खेती करने के साथ पशुपालन व्यवसाय भी करते है।

श्री रामनिवास को पारम्परिक तरीके से पशुपालन करने पर कोई ज्यादा मुनाफा नही हुया क्योंकि दूध उत्पादन के लिए मंहगी बिनौला खल पशु आहार के रूप में खिलानी पड़ती थी एवं दूध भी सस्ता ही बिकता था। इस कारण इनको बचत कम होती थी इन्होने पशुपालन को लाभप्रद व्यवसाय बनाने की सोच ली। इन्ही दिनों इनका सम्पर्क क्षैत्र के सहायक कृषि अधिकारी श्री सुभाषचन्द्र सीगड़ से हुआ। श्री सीगड़ ने श्री रामनिवास भाकर को कृषि व आत्मा विभाग द्वारा आयोजित कृषक प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

दो वर्ष पूर्व श्री रामनिवास ने कृषि विभाग द्वारा परम्परागत कृषि विकास योजनान्तर्गत आयोजित किसान मेलों व आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित कृषक गोष्ठियों में भाग लिया। इन मेलों व कृषक गोष्ठियों के दौरान उन्होने अजौला की खेती के बारे में जानकारी हासिल की एवं स्वयं के घर पर अजौला उत्पादन करने की ठान ली

उन्होने तीन मीटर लम्बाई, एक मीटर चौड़ाई व 10 ईंच गहराई के पांच अजौला पिट बनाए। आत्मा विभाग द्वारा उनको चार हजार रूपये अजौला पिट निर्माण हेतु अनुदान सहायता के रूप में दिए गए। उन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र आबूसर से अजौला का बीज प्राप्त कर अजौला की खेती करना प्रारम्भ किया। श्री रामनिवास दो साल से लगातार अजौला का उत्पादन ले रहे है। इनके पास एक गाय व दो बछिया है जिनमें से एक गाय पिछले दो वर्षो से दूध दे रही है। प्रतिदिन वह गाय को दो किलो अजौला चारे के साथ खिला रहे है। अजौला खिलाना प्रारम्भ करने के साथ ही उन्होने गाय को खिलाये जाने वाली बिनोला खल की मात्रा दो किलो कम कर दी परन्तु दूध उत्पादन में काई कमी नही आई। अजौला को पषु आहार के रूप में काम लेने पर उनको बिनौला खल में दो किलो की कमी कर देने पर उनको प्रतिदिन लगभग 70 रूपये की एवं प्रतिमाह लगभग 2100 रूपये की बचत होने लगी। अजौला प्रोटीन भरपुर होने के कारण दूध की गुणवता भी बढ गयी। श्री रामनिवास को आसपास के किसान जैविक मैन के रूप में भी जानते है क्योंकि वह खेती भी जैविक विधि से ही करते है। श्री रामनिवास का दूध अच्छी गुणवता का होने के कारण आसपास के लोग उसका दूध आसानी से खरीद लेते है। अन्य कृषकों का गाय का दूध लगभग 25 रूपये किलो के भाव से बिकता है परन्तु इनका दूध 40 रूपये प्रति किलो के भाव से बिकता है। इस प्रकार श्री रामनिवास को 7 किलो दूध प्रति दिन बेचने पर 105

रू प्रति दिन व 3000 रूपये प्रतिमाह की अतिरिक्त आमदनी होने लगी है। अजौला को पशु आहार के रूप में खिलाने पर उनको प्रतिमाह लगभग 5000 रूपये की अतिरिक्त आय होने लग गई है।

श्री रामनिवास जिले के कृषकों को अजौला बीज उपलब्ध कराने के साथ–साथ उनको अजौला उत्पादन की तकनीकी के बारे मे जानकारी भी देते है। श्री रामनिवास कहते है कि उनके जीवन में इस बात की संतुष्टि का भाव है कि उन्होने कृषक जगत के लिए कुछ कर रहे हैं